फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा ( क़िस्त : 22 )

# नज़र की कमज़ोरी के अस्बाब मअ़ इलाज

मुत़ा-लआ़ करने का ग़लत़ अन्दाज़

नज़र की कमज़ोरी के रूह़ानी इलाज

अपनी आंखों का ग़लत़ इस्ति'माल

नज़र की कमज़ोरी के ति़ब्बी इलाज

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

( दा'वते इस्लामी )

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे नम्बर **10** और **11** के मवाद समेत अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" ने नई तरतीब और कसीर नए मवाद के साथ तय्यार किया है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

# किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा। ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص١٣٨ دارالفکر بیروت)

### किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

# मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त् में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**म-दनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें राबित़ा न फ़रमाएं।**


## ...राबित़ा :– मजलिसे तराजिम

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

☎ 9327776311 E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net


## हुरूफ़ की पहचान

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फ = پھ | प = پ | भ = بھ | ब = ب | अ = ا |
| स = ث | ठ = ٹھ | ट = ٹ | थ = تھ | त = ت |
| ह़ = ح | छ = چھ | च = چ | झ = جھ | ज = ج |
| ढ = ڈھ | ड = ڈ | ध = دھ | द = د | ख़ = خ |
| ज़ = ز | ढ़ = ڑھ | ड़ = ڑ | र = ر | ज़ = ذ |
| ज़ = ض | स = ص | श = ش | स = س | ज़ = ژ |
| फ़ = ف | ग़ = غ | अ़ = ع | ज़ = ظ | त़ = ط |
| घ = گھ | ग = گ | ख = کھ | क = ک | क़ = ق |
| ह = ھ | व = و | न = ن | म = م | ल = ل |
| ई = اِی / ی | इ = اِ | ऐ = اَے | ए = ے | य = ی |

# पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

**इस** रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
24 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1438 सि.हि./17 अगस्त 2017 ई.



www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

# नज़र की कमज़ोरी के अस्बाब मअ़ इलाज

(मअ़ दिलचस्प सुवाल जवाब)

**शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला ( 30 सफ़ह़ात ) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।**

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**सरकारे मदीना,** क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : फ़र्ज़ ह़ज करो बेशक इस का अज्र 20 ग़ज़्वात में शिर्कत करने से ज़ियादा है और मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ना इस के बराबर है ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## नज़र की कमज़ोरी के असबाब मअ़ इलाज

**सुवाल :** नज़र की कमज़ोरी के अस्बाब मअ़ इलाज बयान फ़रमा दीजिये ।

**जवाब :** फ़ी ज़माना नज़र की कमज़ोरी की शिकायत बहुत ज़ियादा है जिस की बुन्यादी वज्ह इस के अस्बाब की ज़ियादती है लिहाज़ा नज़र की कमज़ोरी के इलाज से पहले इस के अस्बाब तलाश कर के उन्हें दूर करना इस मरज़ के इलाज से कहीं ज़ियादा ज़रूरी है। नज़र की कमज़ोरी के अस्बाब में से चन्द अस्बाब मअ़ इलाज पेशे ख़िदमत हैं :

---

(1) ...... فردوس الاخبار، باب الحاء، ۱/۳۳۹، حدیث: ۲۴۸۴ دار الفکر بیروت



www.dawateislami.net

## मुत़ा-लआ़ करने का ग़लत़ अन्दाज़

**नज़र** की कमज़ोरी का एक सबब मुत़ा-लआ़ करने का ग़लत़ अन्दाज़ है म-सलन पैदल चलते, गाढ़ी में सफ़र करते और लैटे लैटे मुत़ा-लआ़ करना। यूं ही दौराने मुत़ा-लआ़ काफ़ी देर तक किताब वग़ैरा में नज़र जमाए रखने से भी आंखों पर बोझ पड़ता और नज़र कमज़ोर होती है लिहाज़ा मुत़ा-लए़ के दौरान वक़्फ़े वक़्फ़े से आंखों को किताब से हटा कर इधर उधर ह़-र-कत दी जाए। जिस त़रह़ दीगर आ'ज़ा (हाथ पाउं वग़ैरा) थक जाते हैं और हम उन्हें ह़-र-कत (Movement) दे कर या वर्ज़िश वग़ैरा के ज़रीए़ बाहम आराम पहुंचाते हैं येही मुआ़-मला आंखों का भी है। आ'ज़ा को ह़-र-कत देना एक फ़ित़री निज़ाम है येही वज्ह है कि छोटे बच्चे अक्सर कूदते और फुदक्ते रहते हैं, उन्हें लाख डांटते रहें मगर वोह चैन से नहीं बैठते और येह ह़-र-कत (Movement) उन के लिये ज़रूरी है क्यूं कि अगर वोह बिला ह़िसो ह़-र-कत एक ही जगह बैठे रहें तो उन की हड्डियों के नाज़ुक जोड़ सब जामिद (seal) हो कर हाथ पाउं बेकार हो जाएं लिहाज़ा उन्हें उछल कूद से रोकना नुक़्सान देह और निज़ामे फ़ित़रत के ख़िलाफ़ है। यूं ही बा'ज़ जानवरों म-सलन बकरी के बच्चों को बहुत ज़ियादा ह़-र-कत की ज़रूरत होती है येही वज्ह है कि वोह पैदा होते ही फुदक्ने और चोकड़ियां भरने लगते हैं लिहाज़ा हमें भी इस क़ुदरती निज़ाम को बर क़रार रखते हुए आंखों और दीगर आ'ज़ा को ह़-र-कत देते रहना चाहिये, इस के लिये पैदल चलना बेह़द मुफ़ीद है।



www.dawateislami.net

## कम या ज़रूरत से ज़ियादा तेज़ रोशनी में मुत़ा-लआ़ करना

**नज़र** की कमज़ोरी का एक सबब कम या ज़रूरत से ज़ियादा तेज़ रोशनी या ग़लत़ सम्त (Direction) से आने वाली रोशनी में मुत़ा-लआ़ करना भी है कि इस से बीनाई मु-तअस्सिर होती है लिहाज़ा मुत़ा-लआ़ करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि रोशनी ऊपर से या उलटी त़रफ़ (Opposite Side) से आए कि इस त़रह़ आंखों पर ज़ोर कम पड़ेगा और इन्हें सहूलत रहेगी। बत्ती (Light) लगाने का भी येही उसूल है कि छत में लगाई जाए कि इस से ख़ूब रोशनी होती है। पहले लोग लालटेन ज़न्जीर से बांध कर छत से नीचे की त़रफ़ लटका दिया करते थे इस त़रह़ कमरे में चारों त़रफ़ ख़ूब रोशनी होती थी जब कि आज कल बत्तियां (Lights) छत में लगाने के बजाए दीवारों पर लगाने का रवाज है जिस से रोशनी कम हो जाती है क्यूं कि दीवारें रोशनी जज़्ब करती हैं। यूं ही आज कल बा'ज़ लोग ज़ैबाइश (Decoration) के लिये बत्तियों के ऊपर रंगीन प्लास्टिक कवर लगा देते हैं इस से रोशनी मज़ीद कम हो जाती है और कम रोशनी में मुत़ा-लआ़ करने से आंखों पर वज़्न पड़ता है और थकन हो जाती है जिस के नतीजे में नज़र भी कमज़ोर होती चली जाती है।

## गर्दो ग़ुबार और गाड़ियों के धूएं के मुज़िर अ-सरात

**नज़र** की कमज़ोरी का एक बाइस गर्दो ग़ुबार और गाड़ियों का धूआं भी है, इस के मुज़िर अ-सरात से बचने के लिये आंखों को धोते रहना चाहिये और इस का बेहतरीन ह़ल वक़्तन फ़ वक़्तन



www.dawateislami.net

वुज़ू कर लेना है। किसी यूरोपियन डॉक्टर ने एक मक़ाला लिखा जिस का नाम था " आंख, पानी, सिह़्ह़त (Eye, Water, Health)" इस मक़ाले में उस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "अपनी आंखों को दिन में कई बार धोते रहो वरना ख़त़रनाक बीमारियों से दो चार होना पड़ेगा। आंखों की एक ऐसी बीमारी भी है जिस में आंखों की रत़ूबते अस्लिय्या (या'नी अस्ली तरी) कम या ख़त्म हो जाती है और बीनाई कमज़ोर होते होते बिलआख़िर मरीज़ अन्धा हो जाता है। त़िब्बी उसूल के मुत़ाबिक़ अगर भंवों को वक़्तन फ़ वक़्तन तर किया जाता रहे तो इस मरज़ से तह़फ़्फ़ुज़ मिल सकता है।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस यूरोपियन डॉक्टर के बयान कर्दा त़िब्बी उसूल से हम मुसल्मानों के मज़्हब की सच्चाई और उ़म्दगी मज़ीद वाज़ेह़ होती है कि हम रोज़ाना कई बार वुज़ू की सूरत में अपनी आंखों और दीगर आ'ज़ा के तह़फ़्फ़ुज़ का सामान कर लेते हैं।

## अपनी आंखों का ग़लत़ इस्ति'माल

**नज़र** की कमज़ोरी के अस्बाब में से टीवी, वीसीआर या कोमप्यूटर पर फ़िल्में डिरामे देखना, बिला ज़रूरत अपनी या किसी और की शर्मगाह की त़रफ़ नज़र करना और गन्दगी (पेशाब वग़ैरा) देखना भी है। इन अस्बाब से बचने का बेहतरीन ह़ल आंखों का "कुफ़्ले मदीना" लगाना है।

## नज़र कमज़ोर होने का ज़ाहिरी सबब उम्र की ज़ियादती

**नज़र** कमज़ोर होने का एक ज़ाहिरी सबब उम्र की ज़ियादती है। इन्सान जब बूढ़ा हो जाता है तो इस के आ'ज़ा कमज़ोर हो जाते हैं।



www.dawateislami.net

आ'ज़ा की येह कमज़ोरी दर अस्ल मौत का पैग़ाम है। सियाह बालों के बा'द सफ़ेद बाल, जिस्मानी ताक़त के बा'द कमज़ोरी और सीधी कमर के बा'द कमर का झुकाव, मरज़, आंखों और कानों का तग़य्युर (या'नी पहले नज़र अच्छी होना फिर कमज़ोर पड़ जाना और सुनने की ताक़त की दुरुस्ती के बा'द बहरे पन की आमद वग़ैरा ) भी मौत के क़ासिद (Messengers) हैं और पैग़ाम देते हैं कि ज़िन्दगी की मीआ़द ख़त्म होने वाली है। ऐसे कमज़ोर नज़र वालों को बिल ख़ुसूस और बिल उ़मूम सभी को आंखों की रोशनी की फ़िक्र से कहीं ज़ियादा क़ब्र में और पुल सिरात पर रोशनी के लिये म-दनी ज़ेह्न बनाने की ज़रूरत है और इस का बेहतरीन ज़रीआ़ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सुन्नतों की तरबियत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है।

## नज़र की कमज़ोरी के रूहानी इलाज

**सुवाल :** नज़र की कमज़ोरी के कुछ रूहानी इलाज भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

**जवाब :** नज़र की कमज़ोरी का इलाज करने से पहले इस इलाज की अच्छी निय्यतों और मक़ासिद को भी पेशे नज़र रखा जाए कि नज़र सह़ीह़ होगी तो इबादत, तिलावत फ़र्ज़ उ़लूम व दीगर इस्लामी कुतुब का मुता-लआ़ और कस्बे मआ़श (या'नी रोज़ी कमाने) में मदद मिलेगी और ह़स्बे ज़रूरत ह़लाल रोज़ी कमाना ताकि अपने वालिदैन की ख़िदमत और अहलो इ़याल की


www.dawateislami.net

परवरिश कर के अपनी शर-ई ज़िम्मादारियां पूरी की जा सकें तो यक़ीनन कारे सवाब है। नज़र की कमज़ोरी के 4 रूहानी इलाज पेशे ख़िदमत हैं :

**(1)** नज़र की कमज़ोरी दूर करने का एक अ़मल येह है कि वुज़ू के बा'द आस्मान और अगर कमरे वग़ैरा में हों तो छत की त़रफ़ मुंह कर के **सू-रतुल क़द्र** पढ़ लिया करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नज़र कभी कमज़ोर न होगी। **मसाइलुल क़ुरआन** में है : जो वुज़ू के बा'द आस्मान की त़रफ़ देख कर एक मर्तबा सूरए اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ पढ़ लिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की बीनाई में कभी कमी नहीं होगी (या'नी नज़र कभी कमज़ोर न होगी।)[1]

**(2)** पांचों नमाज़ों के बा'द ग्यारह मर्तबा "یَانُوْرُ" पढ़ कर दोनों हाथों के पोरों पर दम कर के आंखों पर फेर लीजिये।[2]

**(3)** आयते मुबा-रका ﴿فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿۲۲﴾﴾ (پ۲۶، قٓ:۲۲) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "तो हम ने तुझ पर से पर्दा हटाया तो आज तेरी निगाह तेज़ है।" हर नमाज़ के बा'द तीन मर्तबा पढ़ कर उंग्लियों पर दम कर के आंखों पर फेरे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बसारत में कमी न होगी बल्कि जिस क़दर कमी हो चुकी होगी वोह भी ठीक हो जाएगी।

**(4)** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : आ-यतुल कुर्सी शरीफ़ याद कर लीजिये, हर नमाज़ के बा'द एक बार पढ़िये,

1 ..... मसाइलुल क़ुरआन, स. 291, रूमी पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर
2 ..... म-दनी पंजसूरह, स. 238, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची



www.dawateislami.net

नमाज़े पन्जगाना की पाबन्दी रखिये और औरतें कि जिन दिनों में उन्हें नमाज़ का हुक्म नहीं (उन दिनों में उन्हें क़ुरआने पाक ज़बानी पढ़ना भी जाइज़ नहीं) वोह भी पांचों वक़्त आ-यतुल कुर्सी इस निय्यत से कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ है, न इस निय्यत से कि **कलामुल्लाह** (या'नी क़ुरआने पाक) है पढ़ लिया करें और जब इस कलिमे पर पहुंचें ﴿وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا﴾ दोनों हाथों की उंग्लियां आंखों पर रख कर इस कलिमे को ग्यारह बार कहें फिर दोनों हाथों की उंग्लियों पर दम कर के आंखों पर फेर लें। (फिर फ़रमाया :) येह अ़मल ऐसे क़वियुत्तासीर (या'नी ज़बर दस्त असर वाले) हैं कि अगर सिद्क़े ए'तिक़ाद (या'नी सच्चा यक़ीन) हो तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गई हुई आंखें (या'नी बीनाई) वापस आ जाएं।[1] येह तो नज़र की कमज़ोरी दूर करने का रूहानी अ़मल था इस के इलावा हर नमाज़ के बा'द एक मर्तबा और आ-यतुल कुर्सी पढ़ने का मा'मूल बना लीजिये कि ह़दीसे पाक में इस की बड़ी फ़ज़ीलत आई है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुर्सी पढ़ेगा, उसे मौत के सिवा जन्नत से कुछ मानेअ़ (या'नी रुकावट) नहीं।[2]

مدینہ

1 ..... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 375, मुल-त-क़त़न मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

2 ..... سنن کبریٰ للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلۃ، باب ثواب آیۃ الکرسی...الخ، ۶/۳۰، حدیث: ۹۹۲۸ دار الکتب العلمیۃ بیروت



www.dawateislami.net

**इस** ह़दीसे पाक के तह़त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सा'दुद्दीन तफ़्ताज़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने फ़रमाया : "जन्नत में दाख़िल होने की शराइत़ में से मौत के सिवा कुछ बाक़ी न रहेगा गोया कि मौत ही उसे जन्नत में दाख़िले से रोके हुए है।" इमाम क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने शर्ह़े बुख़ारी में रिवायत नक़्ल फ़रमाई है कि "जो हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुर्सी पढ़ने पर हमेशगी करेगा उस की रूह़ **अल्लाह** तआ़ला ख़ुद क़ब्ज़ फ़रमाएगा।"(1)

## नज़र की कमज़ोरी के त़िब्बी इलाज

**सुवाल :** नज़र की कमज़ोरी के त़िब्बी इलाज भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

**जवाब :** नज़र की कमज़ोरी का एक त़िब्बी इलाज येह है कि रोज़ाना रात को सोने से क़ब्ल "इस्मिद" सुरमा लगाइये कि येह नज़र को तेज़ करता है जैसा कि **शमाइले मुह़म्मदिय्यह** में है कि त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस्मिद सुरमा लगाया करो कि येह नज़र को तेज़ करता और (पलक के) बाल उगाता है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक सुरमा दानी थी उस में से तीन तीन सलाइयां रोज़ाना रात को दोनों आंखों में लगाया करते थे।(2)

(1) فیض القدیر، حرف المیم، ۲/۲۵۱، تحت الحدیث: ۸۹۲۶ ملتقطاً دار الکتب العلمیة بیروت

(2) شمائل محمدیہ، باب ما جاء فی کحل رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ص۵۰، حدیث: ۴۸ دار احیاء التراث العربی بیروت



www.dawateislami.net

**नज़र** की कमज़ोरी का दूसरा तिब्बी इलाज येह है कि अगर ख़ालिस शहद मुयस्सर हो तो सोते वक़्त इस की सलाई आंखों में लगा लीजिये कि येह आंखों के लिये बहुत मुफ़ीद और बेहतरीन सुरमा है। इस के इस्ति'माल से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नज़र की कमज़ोरी के इलावा दीगर अमराज़ से भी नजात पाएंगे।[1]

*अ़जब नहीं कि लिखा लौह़ का नज़र आए*
*जो नक़्शे पा का लगाऊं ग़ुबार आंखों में*

(सामाने बख़्शिश)

## फ़िनाए मस्जिद में मांगने वाले को देना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़िनाए मस्जिद में किसी मांगने वाले को देना जाइज़ है ?

**जवाब :** इस मस्अले में मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद दोनों का एक ही हुक्म है क्यूं कि मस्जिद में सुवाल की मुमा-न-अ़त की वज्ह वहां शोरो ग़ुल है तो फ़िनाए मस्जिद में भी शोरो ग़ुल की इजाज़त नहीं। मस्जिद या फ़िनाए मस्जिद में अपनी ज़ात के लिये सुवाल करने की दो सूरतें हैं : पहली सूरत येह है कि मांगने वाला मजबूर व लाचार नहीं बल्कि पेशावर भिकारी है तो उसे सिरे से सुवाल करना ही ह़लाल नहीं चे जाएकि मस्जिद हो या बाज़ार और ऐसे को उस के सुवाल पर कुछ देना भी सवाब नहीं बल्कि गुनाह है

---

1..... बहुत सी बीमारियों के तिब्बी व रूहानी इलाज जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुब "म-दनी पंजसूरह", "घरेलू इलाज" और रिसाले "वुज़ू और साइन्स" का मुत़ा-लआ़ कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ढेरों मुफ़ीद मा'लूमात ह़ासिल होंगी। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)



www.dawateislami.net

जैसा कि आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : क़वी (ता़क़त वर) तन्दुरुस्त क़ाबिले कस्ब (कमाने के लाइक़) जो भीक मांगते फिरते हैं उन को देना गुनाह है कि उन का भीक मांगना ह़राम है और उन को देने में उस ह़राम पर मदद, अगर लोग न दें तो झक मारें और कोई पेशा ह़लाल इख़्तियार करें **दुर्रे मुख़्तार** में है : येह ह़लाल नहीं कि आदमी किसी से रोज़ी वग़ैरा का सुवाल करे जब कि उस के पास एक दिन की रोज़ी मौजूद हो या उस में उस के कमाने की ता़क़त मौजूद हो जैसे तन्दुरुस्त कमाई करने वाला और उसे देने वाला गुनहगार होता है अगर उस के ह़ाल को जानता है क्यूं कि ह़राम पर इस ने उस की मदद की ।[1]

**दूसरी** सूरत येह है कि साइल पेशावर भिकारी नहीं बल्कि कोई मोह़ताज मुसाफ़िर है तो अगर वोह नमाज़ियों के आगे से न गुज़रे, न ही लोगों की गरदनें फलांगे और न ही बार बार सुवाल करे तो उसे दे सकते हैं चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : अगर वोह शख़्स पेशावर फ़क़ीर है तो उसे देना, चाहे मस्जिद में हो या इ़लावा मस्जिद, बहर सूरत मन्अ़ है और अगर वोह शख़्स ख़स्ता ह़ाल मुसाफ़िर है कि वहां उस का कोई जानने वाला नहीं और न वोह नमाज़ियों को फलांगता है, न ही बार बार सुवाल करता है तो उसे देना जाइज़ है ।[2]

---

1 .... फ़तावा र-ज़विय्या, 23/ 463, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

2 .... फ़ज़ाइले दुआ़, स. 279, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची



www.dawateislami.net

## इमाम साहिब और कमेटी के साथ रवय्या

**सुवाल :** मस्जिद में म-दनी काम करने के लिये इमाम साहिब और कमेटी के साथ कैसा रवय्या होना चाहिये ?

**जवाब :** मस्जिद में म-दनी काम करना हो या अ़लाक़े में, दीनी काम हो या दुन्यवी इस में हिक्मते अ़-मली और नरमी इख़्तियार करने वाला ज़रूर काम्याब होता है। जिस त़रह़ एक ताजिर गाहक को अपना बनाने के लिये उस के साथ हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी से पेश आ कर बिलआख़िर उस से अपना मक़्सद ह़ासिल कर लेता है तो इसी त़रह़ दीन का काम करने वालों को भी हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर और नरमी का ख़ूगर होना चाहिये लिहाज़ा इमाम साहिब और कमेटी के साथ हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ा-हरा कीजिये, हिक्मते अ़-मली और नरमी से पेश आइये और हरगिज़ किसी भी मुआ़-मले में उन से न उलझे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मसाजिद में म-दनी काम करने में आसानी होगी। ह़दीसे पाक में है : اَلْحِكْمَةُ ضَالَّةُ الْمُؤْمِنِ या'नी हिक्मत मोमिन का गुमशुदा ख़ज़ाना है।[1] याद रहे ! अगर कमेटी में कोई फ़ासिक़े मो'लिन हो तो उस की ता'ज़ीम करने, उसे नुमायां जगह पर बिठाने, ख़ुद उस के क़दमों में बैठने और उस की झूटी ता'रीफ़ वग़ैरा करने की इजाज़त नहीं, जहां फ़ितने का अन्देशा हो वहां दूर रहने में ही आ़फ़िय्यत है।

**अगर** आप की मा'लूमात के मुत़ाबिक़ इमाम साहिब किसी

1 ..... جامع صغیر، حرف الکاف، ص ۴۰۲، حدیث: ۶۴۶۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت



www.dawateislami.net

मस्अले में ग़-लती कर रहे हों तो आप इब्तिदाअन किसी सह़ीहुल अ़क़ीदा, सुन्नी मुफ़्ती साहिब से वोह मस्अला अच्छी त़रह़ समझ लें कि कहीं ऐसा न हो कि इमाम साहिब दुरुसत हों और आप ग़-लती पर हों या इमाम साहिब ख़ुद आ़लिम हों और वोह उस मस्अले की दलील रखते हों । अगर इमाम साहिब ही ग़-लती पर हों तो फिर भी आप अच्छी त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र कर लीजिये कि क्या येह ऐसी ग़-लती है कि जिस की इस्लाह़ शरअ़न ज़रूरी है और येह भी देख लीजिये कि क्या येह बात आप इमाम साहिब को समझा पाएंगे ? अगर समझाना ज़रूरी हो और आप इस की इस्तित़ाअ़त भी रखते हों तो अब सब के सामने टोकने और समझाने के बजाए ह़िक्मते अ़-मली से काम लेते हुए वोही मस्अला किसी मुस्तनद किताब म-सलन "बहारे शरीअ़त" या "फ़तावा र-ज़विय्या" वग़ैरा से निकाल कर इमाम साहिब के पास ले जाइये और अ़र्ज़ कीजिये : "हुज़ूर ! येह मस्अला मुझे समझा दीजिये" और आप का अन्दाज़ भी सीखने वाला हो क्यूं कि उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام हमारे राहनुमा हैं। जब आप सीखने वाले अन्दाज़ में उन से अ़र्ज़ करेंगे तो वोह आप को मस्अला समझा देंगे और हो सकता है कि उन की अपनी तवज्जोह भी उस त़रफ़ चली जाए कि इस मस्अले में तो मैं भी भूल कर रहा हूं। वोह आप को समझाते समझाते ख़ुद भी समझ जाएंगे इस त़रह़ वोह नाराज़ भी नहीं होंगे और उन की इस्लाह़ भी हो जाएगी। इस ज़िम्न में ह़िक्मते अ़-मली की ब-र-कतों से मालामाल एक दिलचस्प ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये :



www.dawateislami.net

## ह़िक्मते अ़-मली की ब-र-कत से मालामाल दिलचस्प ह़िकायत

**ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق फ़रमाते हैं मुल्के शाम में मेरी मुलाक़ात इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से हुई वोह मुझ से फ़रमाने लगे : कूफ़े के उस बिद्अ़ती का क्या ह़ाल है जिस की कुन्यत "अबू ह़नीफ़ा" है ? मैं ने उन की बात सुनी और घर आ गया और तीन दिन मुसल्सल इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बयान कर्दा मसाइल लिखता रहा, तीसरे दिन दोबारा इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के पास गया तो उन्हों ने मेरे हाथ में वोह सफ़ह़ात देखे जिन पर मैं ने मसाइल लिखे हुए थे तो उन्हों ने मुझ से वोह सफ़ह़ात लिये और मुत़ा-लआ़ फ़रमाने लगे, जब उन्हों ने मुत़ा-लआ़ किया तो उन में लिखा था कि येह मसाइल नो'मान बिन साबित की मजलिस से नोट किये गए हैं, इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मसाइल पढ़ते गए और ह़ैरान होते गए बिलआख़िर उन्हों ने मुझ से पूछा कि येह नो'मान बिन साबित कौन है जिस की मजलिस से येह मसाइल नोट किये गए हैं ? मैं ने कहा : येह वोही अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित हैं जिन्हें आप बिद्अ़ती फ़रमा रहे हैं ! फिर मैं ने इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से पूछा अब बताइये कि अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित कैसे हैं ? तो उन्हों ने फ़रमाया : वोह इ़ल्म का समुन्दर हैं, मैं उन की अ़क़्ल व बसीरत पर रश्क करता हूं और अपनी साबिक़ा उन



www.dawateislami.net

तमाम बातों से रुजूअ़ करता हूं जो मैं ने उन के मु-तअ़ल्लिक़ कही थीं ।[1]

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने कैसी ह़िक्मते अ़-मली अपनाई कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى न सिर्फ़ इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शाने अ़ज़मत निशान के मो'तरिफ़ हो गए बल्कि अपनी साबिक़ा तमाम बातों से रुजूअ़ कर के अपनी इस्लाह़ भी कर ली । आप भी इमाम साह़िबान और मसाजिद की कमेटी के अफ़्राद में कोई ऐसी बात देखें कि जिस की इस्लाह़ ज़रूरी हो तो ह़िक्मत भरा अन्दाज़ इख़्तियार कीजिये ताकि उन की इस्लाह़ भी हो जाए और दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में किसी क़िस्म की रुकावट भी पैदा न हो । इस ह़िकायत से येह दर्स मिला कि किसी मश्हूर आ़लिमे दीन बल्कि आ़म मुस्लिमीन के बारे में भी किसी सुनी सुनाई बात पर यक़ीन कर के उन से बदज़न नहीं हो जाना चाहिये जब तक अच्छी त़रह़ तह़क़ीक़ न कर ली जाए । अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ऐसी ग़-लती हो जाए तो शर-ई तक़ाज़ों को पूरा करते हुए उस से तौबा कर लेनी चाहिये ।

*है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में*
*हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में*

مدینہ

1 ..... مناقبِ امام اعظم ابو حنیفۃ للکردری، الجزء: ۱، ص ۳۹ ملتقطاً کوئٹہ



www.dawateislami.net

## ग़ैर मुस्लिम को तर-ज-मए कुरआन देना कैसा ?

**सुवाल :** अगर किसी को मुतर्जम कुरआने पाक देना हो तो कौन सा दिया जाए ? नीज़ ग़ैर मुस्लिम को तर-ज-मए कुरआन या ऐसे रसाइल जिन में आयाते कुरआनी हों देना कैसा है ?

**जवाब :** किसी मुसल्मान को तर-ज-मए कुरआन देना हो तो मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का शोह्रए आफ़ाक़ तर-ज-मए कुरआन "कन्ज़ुल ईमान" दिया जाए कि येह उर्दू ज़बान के तमाम तराजिम में सब से बेहतरीन और मोह़तात़ तरजमा है। रही बात ग़ैर मुस्लिम को तर-ज-मए कुरआन या ऐसे रसाइल देने की जिन में आयाते कुरआनी हों तो उसे येह नहीं दे सकते क्यूं कि ग़ैर मुस्लिम नापाक होते हैं जैसा कि पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** की आयत नम्बर 28 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो मुश्रिक निरे नापाक हैं।" और नापाकी की ह़ालत में कुरआन या तर-ज-मए कुरआन को छूना ह़राम है चुनान्चे पारह 27 **सू-रतुल वाक़िअ़ह** की आयत नम्बर 79 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है : ﴿لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** इसे न छूएं मगर बा वुज़ू।

**हां !** अगर ग़ैर मुस्लिम के हिदायत क़बूल करने की उम्मीद हो तो फिर ग़ुस्ल के बा'द उसे कुरआन या तर-ज-मए कुरआन कन्ज़ुल ईमान या कन्ज़ुल ईमान का दीगर ज़बानों म-सलन इंग्लिश, डच, बंगला, हिन्दी, पश्तो और सिन्धी वग़ैरा में होने



www.dawateislami.net

वाला तरजमा या ऐसे रसाइल जिन में आयाते क़ुरआनी हों देने में ह़रज नहीं। **फ़तावा हिन्दिय्या** में है : ग़ैर मुस्लिम मुस्ह़फ़ (या'नी क़ुरआने पाक) को नहीं छू सकता, हां अगर ग़ुस्ल कर के फिर छूए तो ह़रज नहीं।[1] तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान के साथ साथ अगर इस के तफ़्सीरी ह़ाशिये "ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान" का भी मुत़ा-लआ़ किया जाए तो येह ज़ियादा मुफ़ीद है।[2]

## इस्ति़लाह़ात के तन्ज़ीमी फ़वाइद

**सुवाल :** दा'वते इस्लामी में बोली जाने वाली इस्ति़लाह़ात के तन्ज़ीमी फ़वाइद क्या हैं ?

**जवाब :** हर इदारे और तन्ज़ीम की अपनी अपनी इस्ति़लाह़ात होती हैं। जब कोई अपनी गुफ़्त-गू में उन इस्ति़लाह़ात को इस्ति'माल करता है तो इस से अन्दाज़ा हो जाता है कि येह फ़ुलां इदारे से वाबस्ता है। इसी त़रह़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की भी मख़्सूस इस्ति़लाह़ात हैं, जब कोई इन इस्ति़लाह़ात को इस्ति'माल करता है तो पता चल जाता है कि येह दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता है तो इस से दा'वते इस्लामी की तश्हीर और आपस में एक दूसरे की पहचान होती है।

**दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि वोह दा'वते इस्लामी

---

1 ..... فتاوىٰ هنديه، ٥/٣٢٣ دار الفكر بيروت

2 ..... मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ तफ़्सीर "सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन" का मुत़ा-लआ़ कीजिये। ( शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा )



www.dawateislami.net

की इस्तिलाहात को याद रखे और अपनी रोज़मर्रा की गुफ़्त-गू में इन्हें इस्ति'माल करे ताकि इस से दा'वते इस्लामी का अच्छी त़रह़ तआ़रुफ़ और आपस में एक दूसरे की पहचान हो ।[1]

## मदीना को यसरिब कहना कैसा ?

**सुवाल :** मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا को यसरिब कहना कैसा है ? नीज़ ऐसे अश्आ़र जिन में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا को यसरिब कहा गया है, उन्हें पढ़ने का क्या हुक्म है ?

**जवाब :** मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا को यसरिब कहना ना जाइज़ व गुनाह है चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहना ना जाइज़ व मम्नूअ़ व गुनाह है और कहने वाला गुनाहगार (है) ।[2] लिहाज़ा ऐसे अश्आ़र जिन में येह लफ़्ज़ आए उन्हें पढ़ना जाइज़ नहीं । "क़ुरआने अ़ज़ीम में कि लफ़्ज़ यसरिब आया वोह रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ وَعَلَا ने मुनाफ़िक़ीन का क़ौल नक़्ल फ़रमाया है : ﴿وَاِذْ قَالَتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ﴾ (پ۲۱، الاحزاب: ۱۳)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "और जब इन में से एक गुरौह ने कहा : ऐ मदीना वालो ! यहां तुम्हारे ठहरने की जगह नहीं ।"

---

1 ..... दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी इस्तिलाहात और म-दनी माह़ोल में राइज दीगर अल्फ़ाज़ की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले "बारह म-दनी काम" के सफ़ह़ा 64 ता 67 का मुता-लआ़ कीजिये । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 21/116



www.dawateislami.net

यसरिब का लफ़्ज़ फ़साद व मलामत से ख़बर देता है । वोह नापाक इसी त़रफ़ इशारा कर के यसरिब कहते, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर रद के लिए मदीनए त़य्यिबा का नाम "त़ाबह" रखा ।"[1]

## मदीनए मुनव्वरह को यसरिब कहने की मुमा-न-अ़त

**अह़ादीसे** मुबा-रका में मदीनए मुनव्वरह को यसरिब कहने की सख़्त मुमा-न-अ़त आई है चुनान्चे सरदारे मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मदीना को यसरिब कहे तो इस्तिग़्फ़ार करे । मदीना त़ाबा (पाको साफ़ ख़ुश्बूदार जगह) है, मदीना त़ाबह है ।[2] इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : (ह़दीसे पाक में मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहने पर) इस्तिग़्फ़ार करने के ह़ुक्म से ज़ाहिर होता है कि मदीनए त़य्यिबा का यसरिब नाम रखना ह़राम है कि यसिरब कहने से इस्तिग़्फ़ार का ह़ुकम फ़रमाया और इस्तिग़्फ़ार गुनाह ही से होता है ।[3]

**सरकारे नामदार,** मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मदीना का नाम त़ाबह रखा ।[4] इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना

مدینہ

1 .....फ़तावा र-ज़विय्या, 21/117

2 .....کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل المدینة...الخ، الجزء:۱۲، ۶/۱۰۷، حدیث:۳۴۸۳۶ دار الکتب العلمیة بیروت

3 .....فیض القدیر، حرف المیم، ۶/۲۰۱، تحت الحدیث:۸۷۶۰

4 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب المناسک، باب حرم المدینة...الخ، الفصل الاول، ۱/۵۰۹، حدیث: ۲۷۳۸ دار الکتب العلمیة بیروت



www.dawateislami.net

अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला ने लौहे़ महफ़ूज़ में मदीने का नाम "त़ाबह" रखा है या अपने महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म फ़रमाया कि वोह मदीनए पाक का नाम त़ाबह रखें ताकि यसरिब नाम रखने वाले मुनाफ़िक़ीन का रद करते हुए ना जै़बा (या'नी ना मुनासिब) नाम की त़रफ़ रुजूअ़ करने पर उन की सर-ज़निश (या'नी मलामत) की त़रफ़ इशारा हो जाए।[1] इसी में इमाम श-रफ़ुद्दीन न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के ह़वाले से है : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से ह़िकायत नक़्ल की गई कि जिस किसी ने मदीनए त़य्यिबा का नाम यसरिब रखा या'नी इस नाम से पुकारा तो वोह गुनाहगार होगा । जहां तक क़ुरआने मजीद में यसरिब के नाम के ज़िक्र का तअ़ल्लुक़ है तो मा'लूम होना चाहिये कि वोह मुनाफ़िक़ीन के क़ौल की ह़िकायत है कि जिन के दिलों में बीमारी है ।[2]

**इस** ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : लौहे़ महफ़ूज़ में मदीनए मुनव्वरह का नाम त़ाबा या त़यबा है या रब तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि इस का नाम त़ाबह रखें, इस के मा'ना है पाको साफ़ और ख़ुश्बूदार जगह। इसे रब तआ़ला ने कुफ़्रो शिर्क से पाक किया, यहां के बाशिन्दों को बद ख़ुल्क़ी वग़ैरा से साफ़ फ़रमाया जैसा

مدینہ

1 ..... مرقاۃ المفاتیح ، کتاب المناسک ، باب حرم المدینۃ...الخ ، ۵/۶۲۲ ، تحت الحدیث: ۲۷۳۸ دار الفکر بیروت

2 ..... مرقاۃ المفاتیح ، کتاب المناسک ، باب حرم المدینۃ...الخ ، ۵/۶۲۲ ، تحت الحدیث: ۲۷۳۸ دار الفکر بیروت



www.dawateislami.net

कि आज भी मुशा-हदा है कि मदीनए मुनव्वरह (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا) के (अस्ल) बाशिन्दे अख़्लाक़ व आ़दात और नर्मिये तबीअ़त में बहुत आ'ला हैं। नीज़ ज़मीने मदीना बल्कि दरो दीवार में एक ख़ास महक है वहां के ख़सो ख़ाशाक (कूड़ा करकट) अगर्चे गली कूचों में जम्अ़ हैं मगर बदबू नहीं देते, वहां की मिट्टी में क़ुदरती ख़ुश्बू है मगर महसूस उसे हो जिस के दिमाग़ में कुफ़्रो निफ़ाक़ का नज़्ला ज़ुकाम न हो।[1]

*अ़र्सा हुवा त़यबा की गलियों से वोह गुज़रे थे*
*इस वक़्त भी गलियों में ख़ुशबू है पसीने की*

**हुज़ूरे अकरम**, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : वोह उसे यसरिब कहते हैं और वोह तो मदीना है।[2] मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का नाम "मदीना" रखा। इस की वज्ह वहां लोगों का रहना सहना और जम्अ़ होना और इस से उन्स व मह़ब्बत रखना है और आप ने इसे यसरिब कहने से मन्अ़ फ़रमाया। इस लिये कि येह ज़मानए जाहिलिय्यत का नाम है या इस लिये कि येह "सर्बुन" से बना है जिस का मा'ना हलाकत और फ़साद है और "तस्रीब" बमा'ना सर-ज़निश

مدینہ

1 ..... मिरआतुल मनाजीह़, 4/216, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

2 ..... بخاری، کتاب فضائل المدینة، باب فضل المدینة...الخ، ۱/۶۱۷، حدیث: ۱۸۷۱ دار الکتب العلمیة بیروت



www.dawateislami.net

और मलामत है या इस वज्ह से कि "यसरिब" किसी बुत या किसी जाबिर व सरकश बन्दे का नाम था ।" इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى अपनी तारीख़ में एक ह़दीस लाए हैं कि "जो कोई एक मर्तबा (मदीने को) यसरिब कह दे तो उसे दस मर्तबा "मदीना" कहना चाहिये ताकि इस की तलाफ़ी और तदारुक हो जाए । एक दूसरी रिवायत में है कि "यसरिब कहने वाला **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करे और मुआ़फ़ी मांगे ।" और बा'ज़ ने फ़रमाया है कि इस नाम से पुकारने वाले को सज़ा देनी चाहिये ।" (मज़ीद फ़रमाते हैं :) ह़ैरत की बात है कि बा'ज़ बड़े लोगों की ज़बान से अश्आ़र में लफ़्ज़ "यसरिब" सादिर हुवा है ।(1)

## बा'ज़ अकाबिर के कलाम में यसरिब की वज्ह

**सुवाल :** यसरिब कहने की इतनी मुमा-न-अ़त के बा वुजूद बा'ज़ अकाबिर के कलाम में जो यसरिब का ज़िक्र मिलता है, इस की क्या वज्ह है ?

**जवाब :** जिन अकाबिर के कलाम में येह लफ़्ज़ वाक़ेअ़ हुवा है उन के बारे में येही कहा जा सकता है कि वोह इस हुक्मे शर-ई पर मुत्तलअ़ न हो सके जैसा कि **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 21 सफ़्ह़ा 118 पर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت इर्शाद फ़रमाते हैं : बा'ज़ अश्आ़रे अकाबिर में कि येह लफ़्ज़ वाक़ेअ़ हुवा, उन की त़रफ़ से उ़ज़्र येही है कि उस वक़्त इस ह़दीस व हुक्म पर

मदीना

(1) ...... اَشِعَّةُ اللَّمعات، کتاب المناسک، باب حرم المدینۃ...الخ، الفصل الاول، ۲/۴۱۷ کوئٹہ



www.dawateislami.net

इत्तिलाअ़ न पाई थी जो मुत्तलअ़ हो कर कहे उस के लिये उ़ज़्र नहीं मअ़ हाज़ा शर-ए मुत़ह्हर (या'नी शरीअ़ते मुत़ह्हरा) शे'र व ग़ैरे शे'र सब पर हुज्जत (दलील) है, शे'र शर-अ़ (या'नी शरीअ़त) पर हुज्जत (दलील) नहीं हो सकता।[1]

## अम्रदों पर इन्फ़िरादी कोशिश

**सुवाल :** अम्रदों पर इन्फ़िरादी कोशिश करना कैसा है ?

**जवाब :** इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ किसी को नेक बनाना और बद मज़्हबों की सोह़बत से बचाना यक़ीनन अपनी और उस की भलाई चाहना है। अगर आप को वाक़ेई इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ किसी को नेक बनाने, गुनाहों से बचाने और बुरी सोह़बत से छुटकारा दिलाने का शौक़ है तो पहले ग़ैर अम्रदों पर तवज्जोह दें। जब इस में काम्याबी मिल जाए तो फिर अम्रदों के बारे में सोचें। दूसरों को छोड़ कर सिर्फ़ अम्रदों ही की फ़िक्र में लगे रहना और इन्ही पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहना येह नफ़्सो शैत़ान का धोका है इस से बचना ज़रूरी है, कहीं ऐसा न हो कि शैत़ान के चुंगल में फंस कर, अम्रद पसन्दी का शिकार हो कर अम्रदों की इस्लाह़ करने और इन का ईमान बचाने के बजाए अपने ईमान से भी हाथ धो बैठें। इस ज़िम्न में एक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये और इ़ब्रत के म-दनी फूल चुनिये चुनान्चे

**ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद मुअज़्ज़िन

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, 21/118



www.dawateislami.net

رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तक्रार कर रहा था : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुख़्सत करना।" मैं ने उस से पूछा : इस के इ़लावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे दो भाई थे, बड़ा भाई चालीस साल तक मस्जिद में बिला मुआ़-वज़ा अज़ान देता रहा। जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने क़ुरआने पाक मांगा, हम ने उसे दिया ताकि इस से ब-र-कतें ह़ासिल करे, मगर क़ुरआन शरीफ़ हाथ में ले कर वोह कहने लगा : तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं क़ुरआन के तमाम ए'तिक़ादात व अह़कामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता और नसरानी (ईसाई) मज़्हब इख़्तियार करता हूं। फिर वोह मर गया। इस के बा'द दूसरे भाई ने तीस बरस तक मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह अज़ान दी। मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त नसरानी होने का ए'तिराफ़ किया और मर गया। मैं इस लिये अपने ख़ातिमे के बारे में बेहद फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त ख़ातिमा बिलख़ैर की दुआ़ मांगता रहता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحۡمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि तुम्हारे दोनों भाई आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : वोह ग़ैर औ़रतों में दिलचस्पी लेते थे और अम्रदों (या'नी बे रीश लड़कों) को (शहवत से) देखते थे।[1]

1 ...... الروضُ الفائق، ص ۱۴، دار احیاء التراث العربی بیروت



www.dawateislami.net

## अम्रदों से मेलजोल बढ़ाने की इजाज़त नहीं

**याद रखिये !** इन्फ़िरादी कोशिश के बहाने अम्रदों से मेलजोल बढ़ाने की बिल्कुल इजाज़त नहीं है। अम्रद सिर्फ़ बे रीश ही नहीं होता बल्कि बा'ज़ ऐसे भी होते हैं जिन के पूरे चेहरे पर दाढ़ी नहीं आती बल्कि रुख़्सार ख़ाली होते हैं तो वोह भी पच्चीस साल या इस से भी ज़ाइद उ़म्र तक अम्रद रहते हैं। इस लिये हर एक को अपनी ह़ालत पर ग़ौर कर लेना चाहिये कि अम्रद में कुछ कशिश मह़सूस हो रही है या नहीं ? "हां" की सूरत में उसे देखने और छूने से बचना वाजिब है क्यूं कि इस की मुमा-न-अ़त की इ़ल्लत (Reason) शह्वत है लिहाज़ा जिसे देख कर शह्वत आती हो और लज़्ज़त के साथ बार बार उस की त़रफ़ नज़र उठती हो चाहे वोह बुड्ढा ही क्यूं न हो उसे क़स्दन देखना ह़राम है। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : अगर किसी के दिल में ह़सीन चेहरे, मुनक़्क़श कपड़े और सोने से आरास्ता छत को देखने से छूने की रग़बत पैदा हो तो अब इन चीज़ों की त़रफ़ भी शह्वत की नज़र से देखना ह़राम है। येह वोह बात है जिस से ग़फ़्लत के बाइ़स लोग हलाकतों में पड़ जाते हैं और उन्हें मा'लूम भी नहीं होता।[1] अम्रदों पर भी इन्फ़िरादी कोशिश होनी चाहिये मगर इस के लिये उन्हें, उन जैसे अम्रदों ही के ह़वाले करने और ख़ुद को ह़त्तल इम्कान बचाने में ही आ़फ़िय्यत है कि शैत़ान को बहकाते देर नहीं लगती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें

---

1 ...... احیاء العلوم، کتاب کسر الشهوتین، بیان ما علی المرید...الخ، ۳/۱۲۷ ماخوذاً دار صادر بیروت



www.dawateislami.net

शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

*आंखों में सरे ह़श्र न भर जाए कहीं आग*
*आंखों पे मेरे भाई लगा कुफ़्ले मदीना*

## बुज़ुर्गाने दीन की एह़तियात़ व तक़्वा

**सुवाल :** अम्रदों से अपने आप को बचाने के ह़वाले से बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن का क्या अन्दाज़ हुवा करता था ?

**जवाब :** हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن इल्मो अ़मल और तक़्वा व परहेज़ गारी का पैकर होने के बा वुजूद इस मुआ़-मले में निहायत ही मोह़तात़ रहते थे चुनान्चे इस ज़िम्न में करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा, इमामुल अइम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की एह़तियात़ और कमाले तक़्वा मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد जब बारगाहे सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم में पढ़ने के लिये ह़ाज़िर हुए तो अम्रद व ह़सीन थे। सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم मुत्तक़ी व परहेज़ गार होने के बा वुजूद नज़र की ख़ियानत के ख़ौफ़ से उन्हें अपने सामने बिठाने के बजाए पुश्त या सुतून के पीछे बिठा कर दर्स दिया करते थे ।[1]

( **शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه फ़रमाते हैं :) अम्रद को न तोह़फ़ा दिया जाए और न ही उस से कोई चीज़ ली जाए कि इस से मह़ब्बत बढ़ती है और अम्रद के साथ

1 ..... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی النظر والمس، ۹/۶۰۳ دار المعرفة بیروت



www.dawateislami.net

रवाबित़ बढ़ाना ख़त़रे से ख़ाली नहीं। एक बार म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना होते वक़्त मेरी चादर कहीं खो गई तो एक अम्रद ने बड़ी अ़क़ीदत से अपनी चादर पेश की। मैं ने इस निय्यत से उस से चादर न ली कि अगर मैं इस की चादर ले जाऊंगा तो येह सारे सफ़र में मुझे याद आता रहेगा और इस का याद आना मुनासिब नहीं है। अम्रद की चादर, उस की तह़रीर, उस का रुमाल बल्कि कोई भी निशानी न ली जाए कि उस की निशानी उस की याद का सबब बनेगी और उस की याद आदमी की आख़िरत दाव पर लगा सकती है मगर ख़याल रहे कि उन्हें डांटा न जाए और न ही उन की दिल आज़ारी की जाए क्यूं कि बिला उ़ज़्रे शर-ई किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी गुनाहे कबीरा है इस में उन बेचारों का कोई क़ुसूर भी नहीं।

## क्या म-दनी मुन्ने म-दनी काम कर सकते हैं ?

**सुवाल :** क्या म-दनी मुन्ने दा'वते इस्लामी का म-दनी काम कर सकते हैं ?

**जवाब :** जी हां म-दनी मुन्ने भी दा'वते इस्लामी का म-दनी काम कर सकते हैं और इन्हें म-दनी कामों का जज़्बा भी होता है लिहाज़ा इन्हें म-दनी काम करने की इजाज़त है मगर बड़ों से मोह़तात़ रहें। अगर कोई बड़ा इन्हें ज़ियादा लिफ़्ट दे। बार बार तह़ाइफ़ पेश करे तो समझ जाएं कि येह ख़त़रे की घन्टी है उस से दूर रहें अगर्चे वोह अ़लाक़े का ज़िम्मेदार ही क्यूं न हो।

**म-दनी मुन्नों** को चाहिये कि अपने अन्दर कशिश (Attraction) पैदा न करें। इ़मामा शरीफ़ भी सादा बांधें, ज़ुल्फ़ें आधे कान से ज़ियादा न रखें, ज़रूरतन सादा ऐ़नक इस्ति'माल करें, जाज़िबे



www.dawateislami.net

नज़र (पुर कशिश) फ़्रेम से बचें, बड़ों के साथ ज़ियादा मिलन-सार न बनें, उन के पीछे पीछे भी न भागें और न ही उन के घरों पर जाएं जब तक कम अज़ कम एक मुठ्ठी दाढ़ी न आ जाए इन एह़तियातों को मल्हूज़े ख़ातिर रखें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हम सब को नफ़्सो शैत़ान के मक्रो फ़रेब से बचने और अपनी निगाहों बल्कि जिस्म के हर हर उ़ज़्व का क़ुफ़्ले मदीना लगाने और इस पर इस्तिक़ामत पाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।[1]

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

## ह़ासिद के लिये पांच सज़ाएं :

**ह़ज़रते** सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर कन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ह़ासिद का ह़सद महसूद (जिस से ह़सद किया जाए उस) तक पहुंचे इस से पहले इसे (या'नी ह़ासिद को) पांच सज़ाएं मिलती हैं : (1) न ख़त्म होने वाला ग़म (2) ऐसी मुसीबत जिस पर अज्र न मिले (3) ऐसी मज़म्मत जिस पर ता'रीफ़ न हो (4) रब तआ़ला की नाराज़ी और (5) तौफ़ीक़ से मह़रूमी।

(اَلْمُسْتَطْرَف فِيْ كُلِّ فَنٍّ مُسْتَظْرَف، ۱/۳۶۴ دار الفکر بیروت)

مدینہ

1 ..... मज़ीद मा'लूमात के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां" का मुत़ा-लआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)



www.dawateislami.net

# फ़ेहरिस्त


| उ़न्वान | सफ़ह़ा | उ़न्वान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत | 2 | हिक्मते अ़-मली की ब-र-कत से मालामाल दिलचस्प ह़िकायत | 14 |
| नज़र की कमज़ोरी के अस्बाब मअ़ इ़लाज | 2 | ग़ैर मुस्लिम को तर-ज-मए क़ुरआन देना कैसा ? | 16 |
| मुत़ा-लआ़ करने का ग़लत़ अन्दाज़ | 3 | इस्ति़लाह़ात के तन्ज़ीमी फ़वाइद | 17 |
| कम या ज़रूरत से ज़ियादा तेज़ रोशनी में मुत़ा-लआ़ करना | 4 | मदीना को यसरिब कहना कैसा ? | 18 |
| गर्दो ग़ुबार और गाड़ियों के धूएं के मुज़िर असरात | 4 | मदीनए मुनव्वरह को यसरिब कहने की मुमा-न-अ़त | 19 |
| अपनी आंखों का ग़लत़ इस्ति'माल | 5 | बा'ज़ अकाबिर के कलाम में यसरिब की वज्ह | 22 |
| नज़र कमज़ोर होने का ज़ाहिरी सबब उ़म्र की ज़ियादती | 5 | अम्रदों पर इन्फ़िरादी कोशिश | 23 |
| नज़र की कमज़ोरी के रूह़ानी इ़लाज | 6 | अम्रदों से मेलजोल बढ़ाने की इजाज़त नहीं | 25 |
| नज़र की कमज़ोरी के त़िब्बी इ़लाज | 9 | बुज़ुर्गाने दीन की एह़तियात़ व तक़्वा | 26 |
| फ़िनाए मस्जिद में मांगने वाले को देना कैसा ? | 10 | क्या म-दनी मुन्ने म-दनी काम कर सकते हैं ? | 27 |
| इमाम साह़िब और कमेटी के साथ रवय्या | 12 | | |




www.dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

**मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ







ISBN
0133113

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net